IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# महेश प्रसाद सिन्हा : एक शुभ्र ज्योर्तिमय व्यक्तित्व

**[1]शिवानी कुमारी एवं [2]डॉ0 नलिन विलोचन**

[1]पीएच० डी० शोध छात्रा, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी0 आर0 अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

[2]प्राचार्य, एम० एस० के० वी० महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

**शोध सार :** बिहार की गोद में एक–से–एक बौद्धिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक व्यक्तित्व पैदा हुए, जिनकी छाप समय–संदर्भ में है। आधुनिक काल में जब से गाँधी जी कार्यक्षेत्र बिहार हुआ और स्वतंत्रता का बिगुल बजा अनेक उल्लेखनीय चेहरे हमारे सामने आए, उन्हीं में महेश प्रसाद सिन्हा उर्फ महेश बाबू नाम अग्रणी है। स्व० महेश प्रसाद सिन्हा एक ऐसे आदर्श पुरूष थे जिनके सम्बन्ध में सीमित शब्दों में अपने विचार अंकित करना अत्यन्त कठिन है। स्व० महेश बाबू देश की उन वरेण्य, प्रणम्य, प्रेरक विभूति पुरूषों में थे, जिनका संपूर्ण जीवन देश की पराधीनता से मुक्ति, आधुनिक बिहार के पुनर्निर्माण, शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुररून्नयन को ठोस आकार देते, चरितार्थ करते पल–पल बीता। उनकी जीवन शैली, राजनैतिक सुझ–बूझ जटिल परिस्थितयों में भी शांतभाव एवं निरूद्विग्न हो कार्य को अंतिम परिणति तक पहुँचाने की असाधारण क्षमता थी, जो असाधारण गुण–संपन्न लोकनायक में भी विरल ही देखी जाती है। ऐसे थे शील, सौजन्य और मृदुल व्यवहार की सौम्य मूर्ति महेश बाबू।

**शब्द कुंजी :–** महेश प्रसाद सिन्हा, व्यक्तित्व, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक पुनरूत्थान।

महेश प्रसाद सिन्हा का जन्म 08 जून 1900 ई0 में ग्राम–कनैती, जिला–वैशाली में हुआ था। उनका बचपन संघर्ष और कठिनाईयों से भरा था। माता–पिता के प्यार–दुलार की छाया बचपन में ही उठ गई। प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने मुंगेर से सम्पन्न की तथा बाद में बिहार केसरी डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के अभिभावकत्व में उनकी जीवन यात्रा प्रारंभ हुई। महेश बाबू की सार्वजनिक जीवन यात्रा का शुभारंभ प्रथमतः मुजफ्फरपुर जिला परिषद् के सदस्य पद पर निर्वाचित होने के साथ प्रारंभ हुआ। बाद में उन्होंने उक्त परिषद् के वाइस चेयरमैन और फिर चेयरमैन पद को गौरवान्वित किया।

यह कहना सर्वथा अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि बिहार के राजनैतिक आकाश पर उनके व्यक्तित्व की आभा तीन–चार दशक तक इस कदर व्यापकता से छायी रही कि बिहार प्रदेश के पुनरूत्थान का कोई भी छोटा–बड़ा क्रिया–कलाप उनके समन्वय–मूलक जीवन और चिंतन से जुड़ा ही रहता था। यही कारण है कि साढ़े चार दशकों (1926–1971) की समर्पित सक्रिय समर्पण जीवन–यात्रा उन्हें अत्यंत लोकप्रिय नेता के रूप में, एक शुभ्र ज्योर्तिमय मील के पत्थर, मार्गदर्शक के रूप में प्रतिष्ठित कर सकी। वे उस आदर्शवादी गाँधी–नेहरू युग की सृष्टि थे, जब हमारे लोकनेता जीवन–मूल्यों की स्थापना के लिए स्वार्थ की कुर्बानी करने में सदा आगे रहते थे। 1971 में जब कांग्रेस दो धरों में (इंदिरा कांग्रेस–संगठन कांग्रेस) में बँट गई, तो उनके बहुत से

सहयोगी, जिनके राजनैतिक कद के निर्माण में महेश बाबू की प्रमुख भूमिका थी, वे इंदिरा कांग्रेस में चले गए, पर महेश बाबू सत्ता के आगे न झुक कर संगठन कांग्रेस में ही बने रहे, जो तब सत्ता से बाहर थी। उनके जीवन में चरित्र की दृढ़ता और त्याग का एक अपूर्व आदर्श था। महेश बाबू ऐसे ही चरित्र की दृढ़ता से संपन्न लोकोत्तर गुणों से विभूषित एक असामान्य विभूति–पुरूष थे। उन्हें परंपरा से सामान्य रूप से समृद्धि जरूर प्राप्त थी।

महेश प्रसाद सिन्हा 1926 में मुजफ्फरपुर में बतौर वकील प्रैक्टिस करते थे। उन दिनों वकालत करना प्रतिष्ठा का विषय माना जाता था और स्वतंत्रता संग्राम के अनेक छोटे–बड़े नेता वकील थे। इस पेशा में आने से इन्हें सामाजिक विसंगति, फरेब, अशिक्षा के दुष्परिणाम इत्यादि को जहाँ समझने का मौका मिला वहीं इन्होंने कानून की खामियों–खूबियों को बड़ी बारीकी से परखा।

गाँधी ने राजनीति को कुलीन घरानों के दाँव–पेंच से बाहर निकाल कर आम लोगों के बीच खड़ा किया। उन्होंने लोगों को प्रशिक्षित करना शुरू किया कि राजनीति शासन–पद्धति नहीं, सेवा पद्धति है। हमें दूसरों पर नहीं, अपने पर शासन करना है और दूसरों की सेवा करनी है। भय, लोभ या प्रमाद की कुक्षि से जन्मी भावना सेवा नहीं है, वह तो प्रेम और करूणा से उपजती है। हम जिसे सेवा कहते हैं वह तो किसी दास की विवशता है। वस्तुतः सेवा को दास की विवशता नहीं, स्वामी का धर्म मानना चाहिए। गाँधी के स्वराज या स्वशासन का प्रस्थान – बिन्दु यही है। गाँधी युग में स्थानीय स्वशासी निकायों के सदस्यों को इसीलिए सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। महेश बाबू ने 1927 ई० से अपने सार्वजनिक जीवन का श्रीगणेश किया, क्योंकि इसी वर्ष इन्हें हाजीपुर लोकल बोर्ड के सदस्य के रूप में हम देखते हैं। 1930 ई० में ये मुजफ्फरपुर जिला परिषद के लिए महनार से निर्विरोध निर्वाचित हुए, सदस्य के रूप में, किन्तु अपनी कर्मठता से 1931 में ही उपाध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित हो गये। इन्हें प्राथमिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं देखभाल का दायित्व सौंपा गया। इनकी सेवा–भावना से प्रभावित होकर परिषद् ने 1931–32 में मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का प्रभार भी इनके अधीन कर दिया। इस कार्यक्रम की सफलता से इनकी ख्याति काफी फैल गयी। शिक्षा के क्षेत्र में यहाँ अंकनीय है कि बड़ी संख्या में प्राथमिक विद्यालयों की प्रस्वीकृति, प्राथमिक विद्यालयों का माध्यमिक विद्यालयों में उत्क्रमण, उच्च विद्यालयों की प्रस्वीकृति एवं कृषि कॉलेज की स्थापना सकरा में महेश बाबू के कीर्ति ध्वज के रूप में विराजमान हैं। महेश प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व को हम विभिन्न रूपों में व्यक्त कर सकते हैं उनके व्यक्तित्व को निम्न शीर्षकों के तहत अध्ययन किया गया है।

**श्रद्धावान सेवक** : महेश बाबू बिहार खादी बोर्ड के अध्यक्ष थे। बोर्ड को अपना प्रशिक्षण विद्यालय नहीं था। बोर्ड चाहता कि विद्यालय बोर्ड के अधीन आ जाए। बोर्ड की बैठक में ध्वजा बाबू और रामदेव बाबू से उन्होंने चर्चा चलायी। महेश बाबू ने कहा – क्यों बोर्ड का साइन बोर्ड लगाना चाहते हो। बोर्ड की व्यवस्था विद्यालय का वातावरण प्रदान नहीं कर सकती है। मेरी ओर इंगित कर कहा– यह लड़का नौकरी के लिए खादी क्षेत्र में नहीं आया है। संस्था से इसे जो स्नेह और स्वतंत्रता प्राप्त है, वह तुम्हारे अधिकारियों से सम्भव नहीं होगा। बोर्ड के कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण संस्था के वातावरण में बोर्ड की दृष्टि से अच्छा है। बिना चरित्र निर्माण के खादी की सेवा सम्भव नहीं है। मुजफ्फरपुर में संथा और बोर्ड के काम का अंतर और गुण स्तर स्पष्ट दिखता है।'' दुर्भाग्य, अब संस्थाओं में भी शुचिता और सेवा भावना का ह्रास हो गया। खादी बोर्ड दयनीय दशा में है। राजनेता होते

हुए भी महेश बाबू ने यहाँ के बोर्ड में जो वातावरण बना रखा था और थोड़े ही समय में जो विकास किया वह देश के अन्य राज्यों के लिए मिसाल थी। यह महेश बाबू की रचनात्मक काम के प्रति श्रद्धा और सेवा भावना से ही संभव हुआ।

**मूल्यों की राजनीति** : महेश बाबू राजनैतिक छाल–छद्म एवं जोड़–तोड़ का सहारा लेते तो श्री बाबू के बाद वे मुख्यमंत्री होते। उन्हें कुर्सी से अधिक मूल्यों की चिंता थी। श्री बाबू की गरिमा का ख्याल था। कुछ ही समय के बाद यह स्पष्ट हो गया। कांग्रेस सरकार बदनाम होकर पराजित हुई। संविद सरकार बनी। सर्वसम्मति से महेश बाबू विरोधी दल के नेता चुने गये। मजबूरन प्रतिपक्ष होते हुए भी महेश बाबू ने कभी सरकार के लिए संकट की स्थिति पैदा नहीं की। एक स्वस्थ विरोधी दल की भूमिका निभाया। विधानसभा में चर्चा का ऊँचा स्तर कायम किया। राजस्व मंत्री इन्द्रदीप बाबू ने भूमि सुधार कानूनों के कार्यान्वयन के लिए सर्वदलीय बैठक बुलायी। जय प्रकाश जी की उपस्थिति में महेश बाबू ने कहा– भूमि सुधार के प्रगतिशील कानून कांग्रेस ने बनाये। आप सब विरोधी दल में थे। आप आज इसे कार्यान्वित करना चाहते हैं। तो हम से अधिक प्रसन्न कौन होगा? जयप्रकाश जी ने ठीक ही कहा है कि आप इन्हें कार्यान्वित करने में सफल हो जायेंगे तो मिनी रिवोल्यूशन होगा।

संविद सरकार के भीतर–घात को जनता ने देखा। राजनीति के स्तर पर भूमि सुधार कानून के कार्यान्वयन का अभियान रास नहीं आया। जयप्रकाश जी ने बामपंथी सदस्यों का सलाह दी थी कि आपकी सरकार जानेवाली है। यदि आप भूमि सुधार के प्रश्न पर त्याग–पत्र दे देंगे तो आपकी प्रतिबद्धता रेखांकित होगी। दुर्भाग्यवश उन लोगों से चुक हो गयी। फलस्वरूप भद्दे ढंग से सरकार की कुर्सी के लिए आपसी लड़ाई हो गयी।

स्मरण रहे कि संविद सरकार ने कांग्रेस के भूतपूर्व कई मंत्रियों का जाँच बैठाया था, पर महेश बाबू के नेतृत्व में विधानसभा में कभी भी क्रोध और कडुआहट का प्रदर्शन नहीं हुआ। यह थी महेश बाबू के राजनीतिक मूल्यों की अभूतपूर्व मिसाल।

**आर्थिक सुचिता** : संविद सरकार कांग्रेस के लोगों के गड़े मुर्दे निकालने में पड़ी थी। उन दिनों जब अखबार में मोटे अक्षरों में छपा कि महेश बाबू अध्यक्ष होते हुए भी, खादी बोर्ड से नियमों के प्रावधान के होते हुए भी एक फूटी कौड़ी नहीं लेते थे, तो अफवाहों के बादल साफ हो गये। राज्य की जनता उनकी आर्थिक शुचिता के कायल हो गयी। बोर्ड को उनके बाद इतना निःस्वार्थ अध्यक्ष आज तक नहीं मिला।

कुशल प्रशासक – राज्य ट्रान्सपोर्ट का काम सरकार ने अपने हाथ में लिया। महेश बाबू को इसका जिम्मा सौंपा गया। यात्रियों का निजी बस मालिकों से मुक्ति मिली। चुस्त और उत्तम व्यवस्था सरपट दौड़ने लगी। दिल्ली और महाराष्ट्र आदि की आज की परिवहन व्यवस्था भी उस समय की बिहार राज्य ट्रान्सपोर्ट की व्यवस्था से काफी पीछे दिखती थी। खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की बैठक का लम्बा एजेंडा अध्यक्ष की हैसियत से घंटे भर में अत्यन्त समाधान कारक ढंग से निपटा देते थे।

**योग्य अभिभावक** : महेश बाबू कार्यकर्त्ताओं के नेता नहीं एक पारिवारिक अभिभावक थे। श्री भवनेश्वर चौधरी जी आज जब संस्मरण सुनाते हैं कि उनकी माताजी के स्वर्गवाश होने पर भी किस प्रकार उनको सम्भाला तो उनका कंठ भर आता है। वे कहा करते थे कि आज मुझे जो भी उपलब्ध है वह महेश बाबू के स्नेह के कारण है। उन्होंने एक–एक कार्यकर्त्ता के परिवार को सम्भाला। उनके निवास के लिए सम्बल प्रदान किया। गाँवों के कण–कण में उनके स्नेह और गांव के प्रति अनन्यता अंकित है।

बिहार के महान सपूत, स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्र निर्माता श्री महेश प्रसाद सिन्हा मानवीय मूल्यों के राजनेता थे। सादगी, सरलता, सहनशीलता सदाश्यता की प्रतिमूर्ति महेश प्रसाद सिंह बिहार के ही नहीं भारत के गौरव थे। स्वतंत्रता संग्राम के इस सेनानी में त्याग, तपस्या, कर्त्तव्यपरायणता प्रशासनिक क्षमता तथा संवेदनशीलता का अपूर्व संयोग था। वे राजनीतिक तिकड़म से दूर मानवता के सच्चे पुजारी और पक्के गांधीवादी थे। 'सादा जीवन, उच्च विचार' के पोषक थे और समाज सेवा के लिए उनका सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित था। वे सच्चे देशभक्त, राष्ट्र निर्माता, बिहार के गौरव और मुजफ्फरपुर की प्यारी धरती के चमकता हीरा जिन्होंने अपनी कर्मनिष्ठा से राजनीतिक जीवन में एक कीर्तिमान स्थापित किया और अपनी रचनात्मक प्रवृत्तियों के द्वारा सामाजिक सद्भाव की स्थापना के लिए सर्वस्व त्याग किया। उनका हृदय विशाल था, दृष्टि व्यापक थी और संकीर्ण विचारों से परे ऐसे राजनीतिज्ञ थे जिसे सभी वर्ग, सभी जाति के लोग अभिभूत थे। आज के अंधकार में महेश बाबू की सफल जीवन यात्रा का स्मरण प्रकाश प्रदान करता है। दिशा–दर्शन कराता है। हमें उपनिषद् के अनुशासन को मानकर उनके भस्मीभूत जीवन के तत्वों का स्मरण करना चाहिए।

## संदर्भ–सूची


**[1]** Mapping Bihar : From Medieval to Modern Times : सुरेन्द्र गोपाल।

**[2]** States of India since 1947 : World Statesman

**[3]** Mahesh Prasad Sinha, A Daughter's Tribute, Usha Sinha, First Edition : 2019

**[4]** Shri Krishna Sinha, A Biography RC Prasad, AK Sinha (1988), N.K.Enterprises, New Delhi

**[5]** श्रीकृष्ण सिंह, रामचन्द्र प्रसाद, अशोक कुमार सिन्हा, प्रकाश विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार 1988

**[6]** बनते बिहार का साक्षी, श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही, श्रीकृष्ण शिक्षा प्रतिष्ठान, पटना।

**[7]** मेरी यादें : मेरी भूलें – सत्येन्द्र नारायण सिन्हा।

**[8]** Dr. Binoy Shankaer Prasad - 1967 to 2017 : Bihar Celebrates Half a Century of Decay in Education

**[9]** History of Indian National Congress in Bihar, 1885-1985, K.P.Jayaswal Research Institute, Patna (1985)